International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 2, Issue 1, Jan.-Feb, 2014, pp: (41-43), Available online at: www.erpublications.com

संगीत में ताल वाद्यों का महत्व

डॉ0 सुदेश कुमारी

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभागए गोकुल दास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद
(एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली)

संगीत की परम्परा भारत में बहुत प्राचीन है। अन्य अनेक विधाओं के समान संगीत का भी उदगम स्थान वेद है। 'सामवेद' के संगीत के सम्बन्ध में अब देशी–विदेशी विद्वानों ने पर्याप्त अध्ययन किया है। भाष्यकार ने भी साम का उल्लेख गीति के रूप में ही किया है। पाठशालाओं में 'माणवक' साम गाया करते थे। यज्ञ के अवसर पर भी साम–गान की प्रथा थी। साधारणतया साम–गान पूर्वाह्न में होता था। धीरे–धीरे संगीत धार्मिक परिधि से बाहर निकला और उसने मुक्त वातावरण में प्रवेश किया। गीत के साथ वाद्यों का प्रयोग होने लगा।

श्री महेश नारायण सक्सेना संगीत शास्त्र भाग 2 में लिखते हैं, "भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही अवनद्ध वाद्यों का विशेष महत्व रहा है। .... वैदिक काल से ही इस प्रकार के वाद्य प्रचलित रहे हैं। यह निश्चित है कि भारत में अति प्राचीन काल से ही तबला अथवा मृदंग प्रभृति वाद्य थे। और ऐस वाद्य थे ही नहीं, इसलिए संगीत में ताल वाद्यों का एक महत्वपूर्ण स्थान था। ताल–वाद्यों को बजाने वाले का एक विशिष्ट स्थान था और ताल का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान था।

ताल वाद्यों का प्रयोग संगीत तक की सीमित नहीं था, अपितु धार्मिक, सामाजिक, सामरिक आदि कई कार्यों में इन वाद्यों का महत्व था। तभी तो आदिदेव महादेव जी को अन्य वाद्यों की तुलना में अवनद्ध वाद्य डमरू ही भाया। दुष्टों के दलन हेतु उद्यत होते ही डमरू गरज उठता तो 'सुजन' की सुख–समृद्धि के लिए 'डमरू नाद' गूँज उठता।"

पूर्व तथा उत्तर मध्यकाल में भी इन वाद्यों का बहुत महत्व था। अवनद्ध वाद्यों के विभिन्न प्रकार थे, जो बहुसंख्य थे। इस प्रकार के वाद्यों का प्रयोग भी बहुमुखी था। इनको बजाने वाले भी बहुत बड़े–बड़े विद्वान–कलाविद थे।

वाद्य क्या है ?

संगीतात्मक ध्वनि तथा गति को प्रकट करने के उपकरण को वाद्य कहा जाता है। इसी दृष्टि से प्राचीन काल में मानव कण्ठ भी वाद्य माना गया है, किन्तु कण्ठ वाद्य ईश्वर निर्मित है अतएव मनीषियों ने मनुष्य निर्मित वाद्यों का ही अध्ययन मनन तथा वर्णन किया है। आदि काल से मनुष्य किसी न किसी रूप में वाद्यों का प्रयोग करता आया है जैसे–जैसे मनुष्य सभ्य, सुसंस्कृत होता गया उसके द्वारा प्रयुक्त वाद्य भी विकसित होते गये। यह विकास दो रूपों में हुआ वाद्य निर्माण में प्रयुक्त सामग्री के आधार पर आर वाहन स्वरूपगत तथा वादन सामग्रीगत।

भारतीय शास्त्रों में प्राचीन काल से ही वाद्यों के चार प्रमुख वर्ग माने गये है– तत्, सुषिर, धन, अवनद्ध।
हमारा देश मूल रूप से धार्मिक है यहाँ मन्दिरों में कीर्तन के समय बड़े–बड़े ढोल नगाड़े रखे होते हैं जिन्हें आरती के समय बजाया जाता है देवी पूजा में ढोल नगाड़ों का प्रयोग होता है भौगौलिक कार्यों में शहनाई ढोल, ताशे, ढोलक आदि वाद्यों का प्रयोग होता है शास्त्रीय संगीत में तबला, पखावज प्राथमिक रूप से इन वाद्यों का प्रयोग होता है। संकीर्तन मण्डलियों में ईश्वर भजन के लिये इन्हीं वाद्यों का प्रयोग करके गुणगान किया जाता है। सामाजिक कार्यों में भी इन् वाद्यों का बाहुल्य दिखाई देता है जब हमारे घरो में कोई उत्सव हो, शादी आदि में ताशे का प्रयोग होता है ताशे को ध्वनि सामुदायिक कार्य का बोध कराती है यदि हम ये कहे कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सभी संस्कारों में इस प्रकार के वाद्यों की आवश्ययकता होती है। घरों के

धार्मिक अनुष्ठानों में जैसे कीर्तन, माता की चौकी आदि में और महिला संगीत में ढोलक का बहुत सुन्दर प्रयोग होता है जिस पर सभी खुश होकर कीर्तन और महिला संगीत का आनन्द नृत्य के साथ उठाते हैं।

रायबहादुर आरOलO बतरा लिखते हैं "हमारी जीविका प्राप्त करने की शक्ति, हमार परिश्रम करने की शक्ति पर निर्भर है। कुछ तरीके काम करने की शक्ति को बहुत बचा सकते हैं। इनमें सबसे ज्यादा महत्व रखने वाली शक्ति ताल है।" ताल का प्रत्यक्ष उपयोग करने का एकमात्र साधन है अवनद्ध वाद्य।

संगीत के क्षेत्र में ताल वाद्यों का महत्व सर्वविदित है, सर्वाधिक है। गायन वादन आदि कार्य इन वाद्यों के बिना असम्भव ही होता है। यही कारण है कि बड़े–बड़े गायक माज में आकर जब किसी भी वाद्य के बिना ही गाने लग जाते हैं, तब विवश होकर स्वयं ही मेज, सन्दुक, लोटा आदि किसी भी हाथ आई वस्तु का प्रयोग अवनद्ध वाद्य के रूप में कर लेते हैं।

इसका ठोस कारण है, संगीत में ताल की आवश्यकता, जो सर्वमान्य है। सगीत के सम्पादक ताल अंक म लिखत हैं "ताल संगीत का प्राण है।" ताल के बिना संगीत का अस्तित्व ही असम्भव होता है। यह अकाट्य तथ्य है। ताल का प्रत्यक्ष प्रयोग, क्रियात्मक उपयोग, केवल अवनद्ध वाद्यों के द्वारा ही सम्भव है। संगीत में रूचि लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति जानता होगा कि संगीत गोष्ठी अथवा संगीत सम्मलनों में तबला प्रभृति वाद्यों को बजाने वाले की सर्वप्रथम खोजबीन रहती है। इसका कारण है, ताल वाद्यों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता।

ताल वाद्यों का मुख्य कार्य गायन, वादन आदि के लिये ताल की पूर्ति करना ही नहीं है बल्कि जब वाद्यों के साथ संगीत होती है तो गायन, वादन को अत्यधिक आकर्षक बनाना है जिससे वाद्यों की महत्ता का आभास होता है। नृत्य तो अवनद्ध वाद्यों पर ही निर्भर है। विभिन्न प्रकार के तत्कार गत, तोड़े आदि इन्हीं वाद्यों के आधार पर उत्पन्न होते है या विकसित होते है। कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी नृत्य सम्राट हा बिना अवनद्ध वाद्य के काम चलाना असम्भव है।

इसलिये पंO शारंगदेव ने "नृत्यम्– वाद्यानुगम प्रोक्तम्" कहा है अर्थात् नृत्य, वाद्य का अनुगामी कहा गया है। इसी प्रकार ताल वाद्यों के महत्व में आगे चलते हुए हम देखते है कि तबले का सितार वादन या गायन में क्या महत्व है।

पंO रविशंकर उच्च कोटि के सितार वादक है। उन्होंने अपनी धाक विदेशों में भी जमा ली है किन्तु क्या तबले के सुन्दर साथ के बिना यह सम्भव है कि उनके कार्यक्रम में वही जादू रह सके गायन की सारी सुन्दरता, सारा आकर्षण क्या तबले की संगत के अभाव में सम्भव है चाहे गायक कुमार गन्धर्व हो चाहे उस्ताद अमीर खाँ चाहे श्रीयुक्त कृष्णराव शंकर पंडित हो, चाहे श्रीमती शुभलक्ष्मी। क्योंकि श्रीमती गोवर्धन के शब्दों में 'तबले के साथ, गायन–वादन तथा नृत्य का आनन्द दुगुना बढ़ जाता है।' क्योंकि श्रोताओं को लय का आनन्द तबले पर भी मालूम पड़ता रहता है।

सिनेमा संगीत का सम्पूर्ण वैभव, सारी सफलता, लय और आकर्षण केवल वाद्यों पर ही निर्भर होता है। कोई भी व्यक्ति सिनेमा संगीत में प्रयुक्त वाद्यों की भरमार से उनकी उपयोगिता और सफलता से अपरिचित नहीं होगा। ये वाद्य केवल फिल्मी गीतों की सुन्दरता ही नहीं बढ़ाते, उन्हें लयकारी में ही नहीं बिठाते अपितु कथानक के भावों को स्पष्ट करते हैं, पात्रों के मनोभावों को, बिना संवाद के ही व्यक्त करने में सहायक होते है, प्रकृति को तथा स्थान, समय, श्रृतु आदि को प्रकट करते हैं। एक वाक्य में सम्पूर्ण वातावरण का सम्यक निर्माण करने में मुख्य सहायक होते हैं । वाद्यों के स्वर, दर्शकों को ही नहीं वरन् अभिनेता और पात्रों को भी हँसने तथा रोने के लिये बाध्य कर देते हैं। बिजली की कड़कड़ाहट तूफान की भंयकरता, बादलों की गरज, समुद्र का ज्वारभाटा आदि सेब का सफल दिगदर्शन कर देना केवल वाद्यों का ही कार्य है । इसलिये किसी ने ठीक ही कहा है किबिना वाद्य संगत के काव्य एकदम नीरस लगता है, गद्य हो जाता है और वहीं उसके साथ संगत हो जाये तो वह गीत बन जाता है और तो और श्रोता भी कहने लगता है कि वाह क्या बात है! यह साज भी गा रहा है।

वाद्य एकदम स्वतन्त्र होता है। इसे किसी भी सहायक वाद्यों की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु गायन के लिये वाद्य की आवश्यकता होती है। इन दोनों के बिना नृत्य अधूरा रहता है और वाद्य के बिना गायन परन्तु यह बंधन वाद्य के लिये आवश्यक नहीं है। इसीलिये संगीत में वाद्य का अपना एक स्वतंत्र एवं अलग महत्व है, वाद्य संगीत में संगीत के मूल तत्व स्वर और लय के माध्यम से किसी अन्य तत्व की सहायता के बिना मनुष्यको अलौकिक आनन्द प्रदान करने की क्षमता विद्यमान है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1– निबन्ध संगीत डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग, पृष्ठ– 192
2– ताल सोपन– सौ0 सुमन पाटणकर, पृष्ठ 122
3– ताल सोपन– एल0जी0 पाटणकर, चन्द्रकांत पाटणकर, पृष्ठ 123
4– ताल सोपन– सौ0 सुमन पाटणकर, पृष्ठ– 126
5– hindivivck-org/24